शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संपादकीय

बुद्ध की तीन सिखावनें

विनोबा

हमारे देश में जो अनेक सत्पुरुष हो गए, निःसंदेह उनमें बुद्ध भगवान का विशेष स्थान है। आज यद्यपि ऊपर-ऊपर से देखने वालों को दीखता है कि हिंदुस्तान में बौद्ध-धर्म नहीं है, पर यह केवल भासमात्र है। यहां बुद्ध भगवान की मुख्य शिक्षा, सारी-की-सारी, आत्मसात् कर ली गयी है। उन्होंने तीन बहुत बड़ी बातें हमारे सामने रखीं।

1 वैर से वैर नहीं मिटता

एक स्पष्ट विचार उन्होंने यह रखा कि वैर से कभी वैर शांत नहीं हो सकता। यह कोई नयी बात नहीं थी। उनके पहले भी यह बात हिंदूधर्म के मूलग्रंथांे में हम देखते हैं। लेकिन बुद्ध ने अत्यंत स्पष्टता के साथ किसी प्रकार के अपवाद के बिना इसे रखा। निरपवाद धर्म के तौर पर उन्होंने यह बात दुनिया के सामने रखी। यही बात ईसामसीह ने पांच-सौ साल बाद स्पष्ट शब्दों में रखी। और उसे संतों ने भी बार-बार दुहराया है। फिर भी दुनिया में लोग निःसंशय न बन सके। वे सोचते ळें कि मौके पर वैर का प्रतिकार वैर से ही करना पड़ता है। वह टल नहीं सकता। लेकिन अब विज्ञान के कारण लोगों के मन में शंका पैदा हो गयी है कि हिंसा से प्रश्न कहां तक हल होगा ? इसलिए इस समय बुद्धदेव का यह संदेश बड़ा ही महत्व रखता है। दीख रहा है कि उसके अमल के लिए दुनिया तैयार हो रही है। बीच में हजार साल नाहक नहीं गये, लोग चिंतन-मनन करते रहे। लेकिन अब समय आ गया है कि सामाजिक तौर पर उसका अमल कैसे किया जाये, यह सोचा जाये। अब निर्वैर प्रतिकार सूझ रहा और उसका भी एक शास्त्र सूच रहा है। हम उम्मीद करते हैं कि बुद्ध भगवान का अवतार कार्य अब शुरू हो रहा है।

बुद्ध भगवान ने दुनिया के लिए जो संदेश दिया, उसे उन्होंने अपने जीवन से निर्माण किया था। उन्होंने वह संदेश उस समय दिया, जिस समय हिंदुस्तान का सारी दुनिया से विशेष संबंध नहीं था। उस समय दुनिया को उस संदेश की उनती आवश्यकता भी नहीं थी। लेकिन आज सारी दुनिया को उसकी आवश्यकता है। उनका यह संदेष है - 'वैर से वैर नहीं मिटेगा, क्रोध से क्रोध नहीं जायेगा, झूठ से झूठ नष्ट नहीं होगा।' वैर से वैर बढ़ेगा और क्रोध से क्रोध सुलगेगा। इसलिए वैर का मुकाबला प्रेम से, क्रोध का मुकाबला शांति से और असत्य का मुकाबला सत्य से ही करना होगा। पचास साल पहले हिंदुस्तान में 'बुद्ध जयंती' नहीं होती थी, लेकिन इन दिनों यह शुरू हुई है। कारण स्पष्ट है, भगवान बुद्ध के संदेश का उपयोग आज बहुत है, ऐसा हम महसूस करने लगे हैं। उनका यह उपदेश नया नहीं है। गीता ने भ कहा है - निर्वैरः सर्वभूतेषु। निर्वैर बनने का आदेश वेदों ने भी दिया है। संतों ने भे इसे अपने जीवन में उतारा था। फिर भी दुनिया का हाल बदला नहीं। क्योंकि व्यक्तिगत जीवन में यदि कोई निर्वैर बन भी गया, तो लोग उसका आदर करते थे, फिर भी उसकी वह बात व्यावहारिक नहीं मानते थे। 'निर्वैर होना चाहिए' इसे वे अस्वीकार तो नहीं करते, पर आचरण में नहीं लाते थे।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

बात यह है कि जब तक वैर के कारण नहीं मिटते, तब तक वैर मिट नहीं सकता। कोई अत्यंत प्यासा हो और उसे अगर स्वच्छ, निर्मल पानी न मिल रहा हो, तो वह गंदा पानी भी पी लेता है। उसकी प्रथम मांग तो स्वच्छ पानी की होती है, लेकिन वह न मिले, तो गंदे पानी पर भी उसका चित्त राजी हो जाता है। इसी तरह दुनिया को भी वैर की कोई भूख नहीं है। समाज में आग लगे, ऐसा कोई भी जान-बूझकर नहीं चाहता। लेकिन दुनिया के कुछ सवाल हैं, वे अगर शांति से हल हो जाते हैं, तो वह शांतिमय मार्ग से चलने के लिए तैयार है। किंतु यदि वे मसले शांति से हल न हों, तो भी दुनिया शांति कायम रखे, यह हो नहीं सकता। इसलिए हमें ऐसी युक्ति ढूंढनी चाहिए, जिससे शांति स्थापित हो, शांतिमय शक्ति पैदा हो और दुनिया के अत्यंत कठिन मसले सुलझ जायें। ऐसा किए बगैर अहिंसा की शक्ति के प्रति दुनिया को विश्वास नहीं होगा। इसीलिए हमने भूदान-यज्ञ प्रारंभ किया है। भूदान-यज्ञ निर्वैरता के मार्ग से मसले हल करने की कोशिश है। यह आंदोलन शांति की तलाश के लिए चल रहा है। वह शांति में भरी शक्ति की तलाश कर रहा है। इसलिए हम गांव-गांव जाते हैं, प्रेम से समझाते हैं और भूमिहीनों के लिए जमीन मांगते हैं। इस तरह भूमिहीनों को जमीन मिल जाएगी तो शांति कायम रहेगी। किंतु 'शांति रखो, निर्वैरता से रहो' ऐसा केवल कहते चले जायें, तो शांति कैसे रहेगी ? आज तक तो हम दूसरों से छीनते-बटोरते रहे, संकुचित भावना रखी। यह संकुचित भावना विज्ञान के जमाने में शोभा नहीं देती। विज्ञान ने संकीर्णता कम की है। उससे बुद्धि व्यापक हो गयी लेकिन हृदय अभी भी संकुचित ही रहा है। अतः हरएक को तालीम मिलनी चाहिए कि 'देने से निर्वैरता आएगी।' उसके बगैर भगवान बुद्ध का संदेश कोरा ही रहेगा, अमल में नहीं आयेगा।

भगवान बुद्ध के विचारों की जयंती हम आज मनाते हैं, क्योंकि उसमें निर्वैरता की ऐसी अमर कल्पना है कि उसके आधार से मानव आगे बढ़ सकता है। दुनिया में जैसे-जैसे अधिक वैर बढ़ेगा, वैसे-वैसे इसका भान होने वाला है। बढ़ता हुआ विज्ञान हमें निर्वैरता या विश्वव्यापी वैर, इनमें से किसी एक को चुनने की आज्ञा देता है। जितनी-जितनी विज्ञान की प्रगति होगी, उतने-उतने 'गीता', 'धम्मपद' पढ़े जाएंगे, क्योंकि उनमें अमर मूल्य, अमर तंतु हैं।

2 तृष्णाक्षय

दूसरी बात हमारे सामने उन्होंने यह रखी कि हम तृष्णा बढ़ाते जाएंगे, तो दुःख बढ़ेगा, इसलिए उत्तरोत्तर आवश्यकताएं बढ़ाते चले जाने से लाभ नहीं। यह बात संतों ने दुहराई है और धार्मिक पुरुषों ने भी मानी है। लेकिन कहना पड़ता है कि इस बात के लिए अभी लोकमानस तैयार नहीं है। हिंसा मिटनी चाहिए, यह भावना तो लोगों में आयी है, पर तृष्णा नहीं बढ़नी चाहिए, यह बात निश्चय के तौर पर नहीं आयी है। बल्कि इससे उलटी आशा करते हैं कि हम आवश्यकता खूब बढ़ा सकते हैं, फिर भी निर्वैर जीवन बिताने की युक्ति निकाल लेंगे।

मैं मानता हूं कि यह मृगजल है। अंत में यही सिद्ध होगा कि तृष्णा से वैर अवश्य बढ़ेगा। हर हालत में तृष्णा बढ़ाने से दुःख ही पैदा होगा। यह दूसरी बात है कि परिस्थिति के अनुसार साधन और औजार में फर्क पड़े। पहले पालकी के लिए तृष्णा थी और वह सताती थी, वैसे ही हवाई जहाज में बैठने की तृष्णा भी होगी औश्र समाज को सतायेगी। पहले लोगों को गहने पहनने की वासना थी। मान लीजिए अब उसी तरह गहने

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पहनेंगे, तो जंगली मालूम होंगे। इसलिए वह वासना दूर हो जायेगी, ऐसी आशा करते हैं। परंतु उसके बदले कैमरा होना चाहिए, यह वासना तकलीफ देगी। तात्पर्य, बाह्य पदार्थ के उपयोग के विषय में जीवन उत्तरोत्तर बदलता चला जायेगा, इसमें हर्ज नहीं, परंतु वासना बढ़ाने सेपतन अवश्य होगा। जीवन सुधारने का प्रयत्न बाहर से जरूर करना चाहिए, पर वह तृष्णारहित हो। मुझे डर है कि यह विचार अभी स्पष्ट रूप से लोगों के सामने नहीं आया। जब मनुष्य को निर्वैर-वृत्ति की प्यास लगेगी और मैत्रीभाव की जरूरत मालूम होगी, तभी तृष्णारहित होने की प्यास लगेगी।

3 बुद्धि की कसौटी पर कसें

तीसरी बात बुद्ध भगवान ने हमारे सामने यह रखी कि हर चीज को बुद्धि की कसौटी पर ही कबूल करना चाहिए। तीनों सिखावनें हिंदुस्तान के लिए नयी नहीं हैं। उन्हें विचार के तौर पर हिंदुस्तान ने स्वीकार कर लिया है। वे चीजें हमारे आचरण में नहीं आयीं, पर वे हमारे विचार में अवश्य हैं और हिंदूधर्म ने उसे उत्तम अंश भी माना है। अगर हम ठीक ढंग से देखें तो स्थितप्रज्ञ के लक्षणों में भी यही चीज है। कहना यह चाहिए कि बौद्ध साहित्य में जो तीन शब्द बार-बार आते हैं, वे तीनों शब्द स्थितप्रज्ञ के लक्षणों में आते हैं - प्रज्ञा, भावना और निर्वाण। बौद्धधर्म में इन तीनों शब्दों का जो संग्रह किया गया, उसका मूल आधार गीता है। इसमें जो निर्वैरता का भाव है, वह सारा गीता के 'भावना' शब्द में आ जाता है। उसका अर्थ भक्ति और प्रेम भी है। उसके बिना शांति नहीं हो सकती, ऐसा स्थितप्रज्ञ के लक्षण में कहा गया है। तृष्णा के निरसन की बात तो बुद्ध भगवान ने बार-बार कहीं। पहले से आखिर तक कामना से मुक्ति का अर्थ है - निर्वाण। तीसरी बात स्पष्ट शब्दों में कही है - प्रज्ञा पर बहुत जोर दिया गया है। 'स्थितप्रज्ञ' शब्द का अर्थ ही है, प्रज्ञा स्थिर किया हुआ मनुष्य। इस तरह यह सिखावन हमारे समाज में मान ली गयी है। उस पर अमल नहीं हुआ, परंतु होना चाहिए। इसलिए मान्यता के निदर्शन के तौर पर हमने बुद्ध भगवान को अवतार माना है। **(विनोबा साहित्य: खण्ड 7)**